रूसो

Date : / /

बौद्धिक जागरण :-

फ्रांससी समाज में व्याप्त यह घोर असंतोष मौन नही था। इस असंतुष्ट सम्माज में भिन्न-२ लेखक और विचारक फ्रांस के जीवन के बुराइयों और कठिनाइयों पर प्रकाश डालकर जनता के असंतोष को उभार रहे थे।

वाल्टेयर :-

⇒ अपने समकालीन लेखको में सबसे दक्ष लेखक
⇒ एक महान, लेखक, कवि, दार्शनिक, नाटककार, पत्रकार, आलोचक तथा व्यंगकार था।
⇒ फ्रांस की चर्च की अनैतिकता तथा असहिष्णुता, सामाजिक कुप्रथाओ पर अपने व्यंगात्मक लेख द्वारा प्रहार।
⇒ वाल्टेयर का उद्देश्य अत्याचार, अन्याय, असहिष्णुता तथा अंधविश्वास पर आक्रमण करना था।

⇒ वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अनन्य पुजारी था। उसने लेखो, पुस्तिकाओ, पत्रो आदि में अपने व्यंगात्मक विचारो को प्रगट करके राजा की निरंकुशता पर चोट की।
⇒ वाल्टेयर ने जनता को बतलाया कि वह उसी बात को ठीक समझे जो उनके विचारो के अनुसार ठीक हो। उसने जनता से अपील की कि चर्च और पादरियो के भ्रष्ट जीवन के कारण धर्म जर्जर हो रहा है, उसमे अंधविश्वास करना अनुचित है।

⇒ राजनीति के क्षेत्र में वाल्टेयर के विचारो को उदार या प्रजातंत्रीय नही माना जा सकता क्योकि उसे प्रजा की सुधार की शक्ति में बिल्कुल विश्वास नही था।

Asha

⇒ वाल्तेयर की शैली बड़ी प्रभावकारी थी जो लोगों के दिलों में विद्रोह की भावना उत्पन्न कर रही थी। इस कारण फ्रांस की सरकार उससे घबड़ाती थी, कई बार उसे ~~बास्तिल~~ से निष्कासित कर दिया गया था और उसे बास्तिल देश के कारावास की हवा भी खानी पड़ी थी।

⇒ वाल्तेयर के विचार प्रगतिशील नहीं माने जा सकते लेकिन बौद्धिक जागरण में उसकी देन अमूल्य मानी जाएगी। उसके लेखों के प्रभाव से राज्य तथा चर्च के लिए जनता के हृदय में जो आदर भावना थी और उनका उस पर जो प्रभाव था, उसमें निर्बलता आ गयी।

रूसो :- (1712-1778)

⇒ इस युग के विचारकों में सबसे महान जी जेक्स रूसो था।

⇒ जेनेवा के एक घड़ीसाज का पुत्र

⇒ वाल्तेयर जिस सत्ता का आदर करता था रूसो ने उसे नष्ट कर दिया। वाल्तेयर केवल दूषित संस्थाओं को विध्वंस करना चाहता था, लेकिन रूसो एक सर्वथा नवीन समाज का सृजन करना चाहता था।

⇒ रूसो को क्रांति का अग्रदूत कहा जाता है।

⇒ नेपोलियन कहा करता था कि यदि रूसो ना होता तो फ्रांस में संभवतः राज्य क्रान्ति न होती।

⇒ रूसो के क्रांतिकारी विचारों का पता उसकी प्रसिद्ध पुस्तक दि सोशल कान्ट्रैक्ट में मिलता है। इस पुस्तक में उसने जिन सिद्धान्तों की स्थापना की उनसे फ्रांस में राजतंत्र समाप्त हुआ और गणतंत्र स्थापित हुआ।

⇒ रूसो ने लिखा है - मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है, परन्तु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है।"

⇒ रूसो मनुष्य को सर्वत्र बंधनों से मुक्त कराना चाहता था। इसी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न उसने अपने पुस्तक में

किया है। उसने बताया शुरू में मनुष्य बिल्कुल स्वतंत्र था वह किसी प्रकार के बंधन मे नही था लेकिन समयोपरान्त सभ्यता और विज्ञान का विकास हुआ उसके जीवन में जटिलता आ गई। मनुष्य तरह-२ की कठिनाईयो का अनुभव करने लगा।

⇒ रूसो ने राजतंत्र का आधार संविदा बताया और राजाओ के दैवी अधिकार को अस्वीकार कर दिया।

⇒ रूसो का सिद्धान्त था कि जनता ही सर्वोपरि है। समस्त सत्ता उसी के हाथ मे होनी चाहिए, किसी एक व्यक्ति या वर्ग के हाथ मे नही।

⇒ उसके विचारों में अनेक त्रुटियाँ होते हुए भी उसने दो महान सिद्धान्तो जनसत्ता की सार्वभौमसत्ता तथा समस्त नागरिको की राजनीतिक समानता का प्रतिपादन किया। जो तत्कालीन यूरोपीय राज्य व्यवस्था के लिए घातक थे जिन्होने लोगो को बड़ा प्रभावित किया।

⇒ रूसो के दो उपन्यास - मिलोई, एमिल
इन उपन्यासो मे उसने मनुष्य की प्राकृतिक भावना को उभारने का यत्न किया था और शान-शौकत के जीवन की आलोचना की थी।

⇒ रूसो के साहित्य ने फ्रांस के केवल मध्यमवर्ग और साधारण वर्ग के लोगो को ही प्रभावित नही किया, वरन् विशेषाधिकार युक्त वर्गो पर भी उसका असर पड़ा।

क्रांति के तात्कालिक कारण :-

लुई 16 वे के काल तक आते-2 फ्रांस की वित्तीय व्यवस्था ऋणों में डुब चुकी थी। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम ने फ्रांस के दिवालिएपन पर मुहर लगा दी। अतः आर्थिक दुरावस्था को दूर करने के क्रम में तूर्गो, नेकर, कोलोन जैसे अर्थशास्त्रियो की मदद ली। कोलोन ने विशेषाधिकार प्राप्त कुलीन वर्ग पर कर लगाने का सुझाव दिया। जिसे कुलीनो ने अस्वीकार कर दिया। अतंतः स्टेट्स जनरल की बैठक बुलाई गयी। यह 175 वर्ष बाद हो रही थी, स्टेट्स जनरल की बैठक का समाचार सुनकर सभी वर्ग उत्साहित थे। कुलीनो को उम्मीद थी कि इस बैठक में वे उन विशेषाधिकार को प्राप्त कर सकेंगे जो लुई 14 वां के समय उनसे छिन लिए गये थे।

- मध्यवर्ग के लोगो का मानना था कि वे अपने पक्ष में प्रगतिशील नीतियों का निर्धारण करवा सकेंगे।
- किसानो को आशा थी कि वह सामंती विशेषाधिकारों के विरुद्ध आवाज उठाकर अपने अधिकारो को सुरक्षित कर उनके शोषण चक्र से मुक्त हो सकेंगे।

एस्टेट्स जनरल के अधिवेशन में मताधिकार पद्धति के मुद्दे पर तृतीय स्टेट एवं अन्य स्टेट के बीच विवाद हो गया। मतदान के समय कहा गया कि प्रत्येक स्टेट का एक ही मत माना जाएगा। इस प्रकार विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग का दो तथा जनसाधारण का एक ही मत होता है। जनसाधारण के प्रतिनिधियो ने अर्थात 'तृतीय स्टेट' ने इस मतदान प्रणाली का विरोध किया क्योंकि इससे वे बहुमत होते हुए भी अल्पमत में आ जाते है। तृतीय स्टेट यह चाहता था कि तीनो स्टेट के प्रतिनिधि एक साथ बैठकर बहुमत से निर्णय ले लेकिन पादरी एवं कुलीन वर्ग अलग-2 बैठक चाहते थे। अतः लेकिन 13 June 1789 को एक अप्रत्याशित

घटना घटी, तीन पादरी आकर तृतीय स्टेट में मिल गये। यह सुविधायुक्त वर्ग के आत्मसमपर्ण का प्रतीक था। इस घटना से प्रोत्साहित होकर तृतीय सदन ने एक महान क्रांतिकारी कदम उठाया। उसने अपने आप को फ्रांस की राष्ट्रीय सभा (National Assembly) घोषित कर लिया।

इस्टेट जनरल :-

→ इस्टेटजनरल पादरियो, सामन्तो और जनसाधारण के प्रतिनिधियो की सभा थी।

→ 1616 से इसे बुलाया नही गया था। अतः इसके कार्यक्षेत्र आदि के बारे में बहुत कम सूचनाएँ प्राप्त थी। इंग्लैण्ड की पार्लियामेण्ट के समान इसका विकास नही हो पाया था। तीनो वर्गो के प्रतिनिधि पृथक रूप से अपनी सभाओ में बैठकर विचार विमर्श करते थे।

→ प्रथम वर्ग व द्वितीय वर्ग संख्या में कम थे परन्तु वे अधिकतर विषयों पर एकजुट रहते थे।

→ तृतीय वर्ग की यह माँग थी कि उसकी कुल संख्या दोनो वर्गो से अधिक है प्रथम और द्वितीय स्टेट चाहते थे प्रत्येक स्टेट का एक मत हो परन्तु तृतीय वर्ग यह चाहता था कि तीनो स्टेट के प्रतिनिधि एक साथ बैठे और बहुमत से निर्णय हो।

→ जब 175 वर्ष बाद 5 मई 1789 को राजा लुई ~~16~~ XVI ने इस्टेट जनरल का उद्घाटन किया तृतीय वर्ग ने एक साथ बैठक की माँग की, प्रथम व द्वितीय वर्ग विरोध में सभा छोड़ कर चले गए

राष्ट्रीय सभा :-

⇒ 13 जून को जब तीन पादरी आकर तृतीय वर्ग में मिल गए तो इस घटना से प्रोत्साहित होकर तृतीय सदन ने एक महान क्रांतिकारी कदम उठाया। उसने अपने को फ्रांस की एकमात्र राष्ट्रीय सभा घोषित कर दिया।

टेनिस कोर्ट की शपथ :-

लुई XVI बैठे-2 इन घटनाओं को देख रहा था। 19 जून को पादरियों ने तृतीय सदन में मिल जाने का निर्णय किया पर कुलीनों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे अपनी जिद्द पर अड़े रहे। उन्होंने राजा से अपील की कि वह हस्तक्षेप करके इस झगड़े को तय कर दे। राजा के पास कोई चारा नहीं था उसने हस्तक्षेप करने का तय कर लिया यह उसकी दूसरी मूर्खता थी। यदि वह शुरू में ही इस तरह का हस्तक्षेप किया रहता तो बहुत कुछ हो सकता था। लेकिन इस समय तक बात बहुत आगे तक बढ़ चुकी थी। पादरियों के सम्मिलित हो जाने के कारण तृतीय वर्ग के लोगों की शक्ति काफी बढ़ चुकी थी और राजाज्ञा का उल्लंघन करने के लिए वे पूर्ण तैयार थे।

20 जून को प्रतिक्रियावादी तत्वों के प्रभाव में आकर लुई ने सदन में ताला बन्द करवा दिया। उस दिन राष्ट्रीय सभा के सदस्य बैठक के लिए सभा भवन की ओर गए तो उन्होंने द्वार पर ताला पड़े और सैनिकों को तैनात देखा। ~~सब~~ पास में एक टेनिस कोर्ट था। सब के सब सदस्य उसी तरफ चल दिए। वहीं बेली के सभापतित्व में एक सभा हुई जहाँ मोनियर ने एक शपथ का प्रस्ताव रखा। राष्ट्रीय सभा के सदस्यों ने अपना दायाँ हाथ उठाकर यह शपथ ली कि जब तक वे फ्रांस के लिए एक संविधान की रचना नहीं कर देते तब तक एक दूसरे से अलग नहीं होंगे।

टेनिस कोर्ट की शपथ फ्रांसीसी क्रान्ति का वास्तविक आधार था।

Page No.:
Date: / /

बेस्टील का पतन :-

बास्तिल का पतन फ्रांस की क्रांति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसे फ्रांस की क्रान्ति का आधार माना जाता है। क्रान्ति का प्रथम दृश्य वार्साय मे हुआ था जिसका उद्देश्य इस्टेट जनरल को राष्ट्रीय सभा बनाना था। यह बेस्टील का पतन था।

कारण -

1) प्रथम कारण राजा था जब पेरिस की जनता को ज्ञात हुआ कि राजा के कार्यों से सभा संकट में थी तो वे भयभीत हुए क्योंकि इस समय यह सभा उनकी आशा का केन्द्र थी।
2) पेरिस की जनता का एक वर्ग दुखी और असन्तुष्ट था। भीषण सर्दी तथा भूखमरी के कारण बहुत से भूखे और बेकार लोग पेरिस मे एकत्र हो गए थे।
3) पेरिस का अफवाहो का केन्द्र बन जाना।
4) सैनिको की बड़ी-२ टुकड़िया पेरिस और वार्साय के पास एकत्रित हो रही थी जिससे सभा और पेरिस की जनता भयभीत थे।
5) नेकर को पदच्युत करना।

⇒

नेकर की पदच्युति का समाचार बिजली के समान पेरिस मे फैल गया। ~~उसके आह्वान पर~~ लोग दुकानो को लूटने लगे, अस्त्र शस्त्र एकत्रित करने लगे। भीड़ ने 14 जुलाई को बेस्टील दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। किलेदार दुर्ग समर्पण को तैयार था पर भीड़ ने आक्रमण कर दिया। अन्त में भीड़ ने दुर्ग पर अधिकार कर लिया और निर्दयतापूर्वक किलेदार और सैनिको के सिर काट लिए।

बास्तिल का पतन के युगान्तरकारी घटना थी। बास्तिल के पतन से यह सिद्ध हो गया कि जनता राष्ट्रीय सभा के साथ है न कि राजा के साथ। यह भी स्पष्ट हो गया कि फ्रांस की क्रांति संविधानिक मार्ग पर न चलकर हिंसात्मक उपायो का सहारा लेगी।

बास्तिल पतन का परिणाम -

⇒ जब यह खबर प्रांतो में फैली तो किसान उत्तेजित हो गए प्रांतो में भी इस तरह के अनेक बास्तिल थे जिनको नष्ट करना आवश्यक था।
⇒ कृषको और मजदूरो ने चुंगी पतियों के चंगुल से निकलने का इसे उचित अवसर समझा। कृषको ने कुलीनो के किले लूट लिए सारे कागज-पत्र जला दिए मठो और पादरियो को खूब लूटा गया।
⇒ सामन्तवाद का पतन हो गया।
⇒ फ्रांस मे अराजकता छा गयी।